Airo International Research Journal
Volume XX, ISSUE: 1
ISSN: 2320-3714
October 2020

Multidisciplinary
Peer Reviewed Indexed Journal
Impact Factor 5.68

इक्कीसवीं सदी में गाँधी जी की प्रासंगिकता

डॉ. अवधेष कुमार दूबे
असिस्टेण्ट प्रोफेसर–अर्थषास्त्र विभाग
कमला नेहरू विधि संस्थान, सुलतानपुर, उ0 प्र0

डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह
असिस्टेण्ट प्रोफेसर–राजनीति विज्ञान विभाग
के.एन.आई.पी.एस.एस. सुलतानपुर

शोध पत्र

आज महात्मा गाँधी का नाम न केवल भारत के लिए ही, अपितु पूरे विश्व के लिए एक अवधारणा हो गयी। गाँधी जी मात्र एक राजनीतिज्ञ ही नहीं, बल्कि अर्थशास्त्री, समाज सुधारक, शिक्षाशास्त्री, जननायक एवं दार्शनिक भी थे। महात्मा गाँधी का जीवन ही उनके विचारों और आदर्शों की अभिव्यक्ति है। उनके विचारों और उनके द्वारा दिय गये सन्देशों को उनके जीवन से पृथक नहीं किया जा सकता है। मानव जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जिस तरफ गाँधी जी का ध्यान न आकर्षित हुआ हो। गाँधी जी कोई उपदेशक या मत के प्रवर्तक भी नहीं थे, उन्होंने तो अपनी दैनिक जीवनचर्या को इस प्रकार ढाला कि वह व्यावहारिकता के चरम पर पहुँचकर लोगों को आज भी प्रेरित कर रही है। मानव समाज के बीच सहअस्तित्व के प्रचार–प्रसार तथ परिविस्तार भारतीय समाज में सर्वप्रथम गाँधी जी ने किया।

सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, सर्वोदय, भारत छोड़ो आन्दोलन, अस्पृश्यता, नारी मुक्ति, स्वदेश प्रेम और समता के प्रणेता गाँधी की भूमिका विभिन्न क्षेत्रों में रही है, जो कि आज के समाज के लिए एक आदर्श हैं। गाँधी जी अपने विचार और दर्शन के कारण पूज्य नहीं हुए, बल्कि उनकी महानता उनके आचरण से सिद्ध हुई है। गाँधी जी के बारे में अमेरिकी पादरी डॉ0 जान हंस ने कहा है कि ''ईसा मसीह के बाद गाँधी जी संसार के महानतम मानव थे। वे इसलिए महान नहीं थे कि उन्होंने अपने देश के स्वाधीनता संग्राम का सफलतापूर्वक संचालन किया, बल्कि इसलिए कि हिंसा, स्वार्थ, शक्ति की तृष्णा और नैतिक पतन के वर्तमान वातावरण में उन्होंने सत्य, अहिंसा और साधनों की पवित्रता का पाठ व्यावहारिक जीवन द्वारा लोगों के गले उतारा।''

Airo International Research Journal
Volume XX, ISSUE: 1
ISSN: 2320-3714
October 2020
Multidisciplinary
Peer Reviewed Indexed Journal
Impact Factor 5.68

भारतीय राजनीति में गाँधी जी का पदार्पण उदारवादी नेता के रूप में हुआ। सन 1893 में दक्षिण अफ्रीका के एक भारतीय व्यापारिक कम्पनी के निमन्त्रण पर वहाँ चले गये। वे वहाँ गोरी सरकार द्वारा प्रवासी भारतीयों पर किये जा रहे अत्याचारों के विरुद्ध वे अपनी 'अहिंसा की तलवार' सत्याग्रह का सफल प्रयोग कर विजय प्राप्त किया। यहीं पर गाँधी जी ने सर्वप्रथम सत्याग्रह आन्दोलन का सफलतापूर्वक परीक्षण किया। सन् 1914 में अफ्रीका से भारत लौटने पर गाँधी जी को बम्बई में 'मह (1) की उपाधि से विभूषित किया गया।[1]

गाँधी जी का विचार था कि सत्याग्रह मात्र एक अस्त्र है, जिससे बुराई और अन्याय का प्रतिरोध सम्भव है। यह न केवल अन्याय और बुराई का प्रतिकार करने का अस्त्र है, अपितु एक जीवन पद्धति भी है।[2]

गाँधी जी का विचार था कि स्थायी शान्ति के लिए समाज में व्याप्त आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक विषमता को समाप्त किया जाना चाहिये। अमीरी और गरीबी के बीच की खाई को पाटा जाना चाहिये। इसके लिए गाँधी जी ने ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त प्रतिपादित किया।[3] जिसके अनुसार सम्पन्न लोगों को अपने अतिरिक्त धन का स्वेच्छापूर्वक त्याग करके उसे सामाजिक हित में लगाना चाहिये, जिससे समाज में आपसी सहयोग की जड़ मजबूत हो और संघर्ष की स्थिति न उत्पन्न हो। गाँधी जी वास्तव में पूँजीवाद के विरुद्ध थे न कि पूँजीपति के। वे पूँजीवाद का विरोध इस लिए करते थे कि इससे देश की राष्ट्रीय आय थोड़े से व्यक्तियों के हाथों में केन्द्रित हो जाने का भय रहता है। उनका कहना था कि जहाँ आवश्यकता से अधिक संग्रह है, वहाँ अभाव पैदा होता है। जहाँ अभाव है वहाँ असंतोष एवं विछोभ होगा ही। वर्तमान में गाँधी जी के ये शब्द खरे उतर रहे हैं, क्योंकि कोई खा–खाकर मर रहा है और कोई खाना के बिना मर रहा है। उनका विचार था कि पूँजीवाद एवं राज्यवादी अर्थव्यवस्थायें भुखमरी, बेरोजगारी एवं अभाव को जन्म देती हैं, जिससे समाज में अशान्ति एवं अराजकता बढ़ती है। यद्यपि गाँधी जी का ट्रस्टीशिप सिद्धान्त आधुनिक अर्थशास्त्रियों के गले के नीचे नहीं उतरता, किन्तु यदि इस सिद्धान्त को अमल में लाया जाय तो न केवल भारत में अपितु पूरे विश्व में आर्थिक समानता स्थापित की जा सकती है। गाँधी जी ने मानव के लिए मानव द्वारा मानव के सहयोग से विकसित होने वाली तकनीकी पर बल दिया।

गाँधी जी का विचार था कि अहिंसा केवल नीति नहीं, बल्कि यह तो उनका धर्म भी है। अहिंसा उनकी जीवन शैली भी है। अहिंसा को वे हिंसा से बड़ी ताकत मानते थे। गाँधी जी ने अहिंसा के पालन के लिए मन, वचन तथा कर्म से अहिंसक होने का आह्वान किया, क्योंकि उनका मानना था कि शारीरिक प्रताड़ना ही हिंसा नहीं है अपितु कुविचार मात्र हिंसा है। उतावलापन हिंसा है। मिथ्या भाषण हिंसा है। किसी का बुरा चाहना हिंसा है। संसार को जिस चीज की आवश्यकता है, उस पर कब्जा रखना भी हिंसा है। इस तरह यह स्पष्ट है कि गाँधी जी के अहिंसा की अवधारणा मन, बचन और कर्म से सम्बन्धित है। गाँधी जी ने 'यंग इण्डिया' नामक पत्रिका (2) ेंखा था, जिन ऋषियों ने हिंसा के बीच अहिंसा का रास्ता खोज निकाला, वे न्यूटन से अधिक प्रखर बुद्धि वाले लोग थे। वे स्वयं बैलिंगटन से अधिक वीर योद्धा थे। स्वयं हथियारों का प्रयोग जानते हुए भी उन्होंने इसकी व्यर्थता का अनुभव किया और उन्होंने युद्ध से दुखी संसार को बतलाया कि इसकी मुक्ति हिंसा द्वारा नहीं, अपितु अहिंसा द्वारा ही सम्भव है।[4] कुछ विचारकों ने अहिंसा को कायरों एवं निष्क्रियलोगों का अस्त्र माना है। परन्तु गाँधी जी का कहना था कि यदि कायरता और हिंसा में से किसी को चुनने का अवसर दिया जाय तो मैं हिंसा को चुनने की सलाह दूँगा, क्योंकि अहिंसा कायरता का कवच नहीं है, अपितु यह बहादुरी का उच्चतम गुण है। गाँधी जी ने कहा था कि यदि मेरा पुत्र तड़प रहा हो और उसका कोई इलाज न हो तो मुझे उसके जीवन को समाप्त करना अपना कर्तव्य समझना चाहिये।[5]

महात्मा गाँधी जी ने सत्य और ईश्वर को एक माना। सत्य के सच्चे पुजारी के रूप में उनका विश्वास था कि सत्य ईश्वर है और ईश्वर सत्य है तथा ईश्वर प्रेम है और प्रेम ही ईश्वर है। उन्होंने सत्य के सामने अन्य किसी बात से समझौता नहीं किया।[6] अपने इस विचार को स्पष्ट करते हुए गाँधी जी ने लिखा कि ''यह शाब्दिक सत्यता से सम्बन्धित नहीं है, बल्कि विचारों की सत्यता से सम्बन्धित है। यह केवल हमारी अवधारणाओं का सापेक्षिक सत्य ही नहीं, बल्कि निरपेक्ष सत्य सनातन सिद्धान्त है जो कि ईश्वर है।''[7] गाँधी जी ने सत्यान्वेषण के लिए आत्मशुद्धि को आवश्यक माना है और आत्मशुद्धि के लिए कुछ आवश्यक उपकरण जैसे सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य आदि हैं।उनके मतानुसार सत्य अन्तरात्मा की आवाज है। भारत की स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में उन्होंने स्पष्ट

Airo International Research Journal
Volume XX, ISSUE: 1
ISSN: 2320-3714
October 2020
Multidisciplinary
Peer Reviewed Indexed Journal
Impact Factor 5.68

कहा था कि ''मैं तीन सौ साल तक स्वतन्त्रता की प्रतीक्षा करने को उद्यत हूँ, परन्तु असत्य साधन नहीं अपनाऊँगा।''[8]

गाँधी जी ने सभी धर्मों की एकता पर बल देते हुए 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का विचार प्रतिपादित किया। वे धर्म एवं नैतिकता को एक दूसरे का पर्यायवाची मानते हुए राजनीति में धर्म को लाने पर बल देते रहे तथा शुद्ध जीवनयापन के ग्यारह सिद्धान्तों– अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह, शरीर श्रम, आस्वाद, निर्भयता, सर्व धर्म समभाव, स्वदेशी तथा स्पर्श भावना का प्रतिपादन किया।[9] महात्मा गाँधी के धर्म में ऊँच–नीच, जाति भेद, रंग भेद के लिए कोई जगी नहीं थी। गाँधी जी ने ऐसे मन्दिरों में प्रवेश से इन्कार कर दिया, जहाँ अछूतों का प्रवेश वर्जित था।[10]

गाँधी जी ने जहाँ एक ओर राजनी। (3) धर्म के प्रवेश की इच्छा व्यक्त की, वहीं दूसरी ओर वे संसदीय लोकमन्त्र एवं इससे सम्बन्धित निर्वाचन पद्धति की आलोचना करते हैं। स्वयं गाँधी के शब्दों में– ''उस समय तक मैं धार्मिक जीवन व्यतीत नहीं कर सकता था, जब तक कि मैं स्वयं को सम्पूर्ण मानवता के साथ एकीकृत न कर लेता और मैं यह उस समय तक नहीं कर सकता था जब तक कि राजनीति में भाग नहीं लेता।[11]

गाँधी जी ने विभिन्न आन्दोलनों से राष्ट्र में एक जागरण उत्पन्न किया तथा जन–जन में यह अनुभूति पैदा किया कि हम निरस्त्र हैं पर छुद्र नहीं हैं, हम शाषित हैं पर भाग्य के भरोसे अबनहीं रहेंगे। हम पराधीन हैं पर उस पराधीनता की सांकलों को चूर–चूर किये बिना दम न लेंगे। गाँधी जी ने राष्ट्र को सत्य का मार्ग बताया और अहिंसात्मक सत्याग्रह का अस्त्र प्रदान किया।

परन्तु कतिपय लोगों के द्वारा आज गाँधी जी को बेईमान, धोखेबाज कहने से नहीं चूकते। निश्चय ही आज की राजनीति निःस्वार्थ लोक सेवा और नैतिकता का दम्भ नहीं भर सकती। आज की राजनीति मात्र 'सत्ता परायण' है। देश की जनता व देश सेवा उनके लिए कुछ भी नहीं है, मात्र पद, या मन्त्री की कुर्सी ही मुख्य है। इन्हीं अवसरवादी, स्वार्थलोलुप नेताओं के कारण ही शायद गाँधी जी ने कहा था कि आजादी की हिफाजत आजादी लेने से मुश्किल है। गाँधी जतीय, भाषायी, क्षेत्रीय भेदभावों से ऊपर उठकर

मानवता तथा राष्ट्रीयता पर आजीवन बल देते रहे, जबकि आज के राजनेताओं के लिए सभी मुद्दे राजनीतिक लाभ के हथकण्डे हैं।

अभी हाल में ही कोरोना वैश्विक महामारी से बचाव के उपायों को अपनाने के लिए किये गये कठोर प्रतिबन्धों का जो जनमानस पूर्णतः पालन नहीं कर सका, उसको अन्ततः कर्तव्यपालन की सीख देते हुए शासन–प्रशासन द्वारा लोगों के मुँह पर मास्क लगाते हुए, गाँधी जी के प्रेम और सद्भावनापूर्वक पालन कराने के सिद्धान्त को लागू करने का प्रयास किया जा रहा था, जो काफी प्रभावी भी हुआ। ऐसे में गाँधी जी के सिद्धान्तों विचारों की वर्तमान समय में पूर्ण प्रासंगिकता परिलक्षित होती है।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि भारतीय समाज के लिए गाँधी जी अधिकाधिक प्रासंगिक हैं। क्योंकि उनके दर्शन में हमारी सभ्यता, संस्कृति के तत्व समाहित हैं। उसका पोषण भारत माता की मिट्टी, जल, वायु से हुआ है। महात्मा गाँधी निर्विवाद रूप से 21वीं सदी के भारत के ही नहीं, बल्कि विश्व के महानतम शिखर पुरुष हैं।

सन्दर्भ सूची :–

1. डॉ0 पुरुषोत्तम नागर, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, पृष्ठ–332–33,
2. डॉ0 ए0 अवस्थी एवं आर0के0 अवस्थी, भारतीय राजनीतिक चिन्तन, पृष्ठ–296,
3. डॉ0 पुखराज जैन, प्रमुख राजनीतिक विचारक, पृष्ठ–98,
4. शम्भूरत्न त्रिपाठी, गाँधी धर्म और समाज, पृष्ठ–37,
5. बी0 एल0 ग्रोबर, यशपाल, भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम तथा सम्वैधानिक विकास पृष्ठ–353–54,
6. यंग इण्डिया, अगस्त 1926,
7. बाल्मीकि चौधरी, दैनिक हिन्दुस्तान, दिनांक 02.10.1971,
8. बी0एल0 ग्रोबर, यशपाल, भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम तथा सम्वैधानिक विकास पृ0–355,
9. जे0बी0 कृपलानी, गाँधी : हिज लाइफ एण्ड थाट, पृष्ठ–337,
10. जे0बी0 कृपलानी, गाँधी : हिज लाइफ एण्ड थाट, पृष्ठ–333,
11. डॉ0 पुखराज जैन, प्रमुख राजनीतिक विचारक, पृष्ठ–80,

Airo International Research Journal
Volume XX, ISSUE: 1
ISSN: 2320-3714
October 2020

Multidisciplinary
Peer Reviewed Indexed Journal
Impact Factor 5.68